National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 247-250
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल
पुराणविद्या पीठ प्रमुख,
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110016

Correspondence:
प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल
पुराणविद्या पीठ प्रमुख,
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110016

वाल्मीकी रामायण में आधुनिक सामाजिकचेतना का विमर्श

प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल

किसी भी रचनाकार का अपने ग्रंथ प्रणयन का प्रथम उद्देश्य "समाज का कल्याण" होता है। उसकी कृति में समाज कल्याण के प्रति व्यक्त की गई सभी भावनाएँ उस पुस्तक के प्रति सामाजिक विचारों के दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। जैसे कि भगवान वाल्मीकि ने रामायण के प्रारंभ में ब्रह्माजी से एक ऐसे उपयुक्त नायक की माँग की जो वर्तमान संसार में सर्वाधिक गुणवान है और सबसे शक्तिशाली है। वह धार्मिक कर्तव्यों में पारंगत, कृतज्ञ, सत्यवादी और अपनी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ है।

कोऽन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्चवीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥[1]

यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक सदाचारी अथवा चरित्रवान नेता का अनुसरण करे तो समाज भी श्रेष्ठ चरित्रवान बन जाता है।

महाभारत में भी महर्षि वेदव्यास ने समाज-जागरण की उद्घोषणा करते हुए कहा हैं कि **धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते[2]**

कालिदास ने भी समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा उसको यथोचित दिशा प्रदान करने के लिए अपने ग्रन्थ में अनेकों सिद्धांतों, मूल्यों, तथा समाज कल्याण के लिए उपयोगी दृष्टिकोणों को प्रदर्शित किया है। इसी प्रकार वाल्मीकिरामायण के बाद लौकिक संस्कृत साहित्य में तब से लेकर वर्तमान समय तक के सभी रचनाकारों ने अपनी कृतियों में अपने-अपने कालखंडों में हुई धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विभीषिकाओं,घटनाओं व परिस्थितियों को भली-भाँति समझकर समाज कल्याण का दृष्टिकोण व्यक्त किया है। विश्व की समस्याओं के समाधान के लिए इन मनीषियों ने मानव उत्थान के लिए समाज के समक्ष जितने भी दृष्टिकोण प्रस्तुत किए है वस्तुतः उन सभी का यथेष्ट समाधान वाल्मीकिरामायण के नायक राम के चरित्र में स्वभावतः परिलक्षित होता है। क्योंकि उन सभी दृष्टिकोणों का सार यदि एक वाक्य में निहित है तो वह है- **रामादिवत् वर्तितव्यं न तु रावणादिवत्।** अर्थात् राम की तरह व्यवहार करना चाहिए, रावण की तरह नहीं।

इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में प्रवृत्ति-निवृत्ति का निर्देश करते हुए धर्म,आचार,व्यवहार व संस्कारों का उचित पालन, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, वैश्विक एकता, सामाजिक संरचना तथा उसमें व्यक्तिगत व सामाजिक भूमिका, मानवीय कर्तव्यों का निर्वहन,नैतिकता आदि विषयों को दर्शाया है।

वाल्मीकिरामायण में वर्ण-व्यवस्था

वाल्मीकिरामायण से ज्ञात होता है कि वैदिक काल से चली आ रही सामाजिक संरचना में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए वर्ण व्यवस्था का प्रावधान रहा है। वाल्मीकिरामायण में समाज का सुव्यवस्थित वर्णन किया गया है। रामायण में वर्ण व्यवस्था का संदर्भ, ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार ही है, चार वर्णों की रचना विधाता ने की थी। जटायु ने राम से कहा कि ब्राह्मण भगवान के मुख से, क्षत्रिय उनकी भुजाओं से, वैश्य उनकी जांघों से और शूद्र उनके पैरों से पैदा हुए हैं-

मुखतो ब्राह्माणा जाता उरसः क्षत्रियास्तथा।
उरूभ्यां जज्ञिरे वैश्याः पद्भ्यां शूद्रा इति॥[3]
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहुः राजन्यः कृतः।
उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत्॥[4]

वाल्मीकिरामायण में जाति व्यवस्था प्रचलित थी लेकिन उस समय जातिगत वैमनस्य नहीं था, जाति का निर्धारण व्यक्ति के कर्मों के अनुसार होता था। प्रत्येक जाति अपने-अपने धर्म का पालन करती थी।

चातुर्वर्ण्यश्च लोकेऽस्मिन् स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति।[5]

वे सभी वर्ण अपने-अपने कार्यों से संतुष्ट थे और उसका पालन करने में लगे हुए थे।

ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याः शूद्रालोभविवर्जिताः।
स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः॥[6]

कुछ सन्दर्भों से यह भी पता चलता है कि उस समय के समाज में वर्ण व्यवस्था बंधन नहीं था। सभी वर्णों को उनके कर्मों के अनुसार अन्य दूसरे वर्ण में जाने का अधिकार था।

विश्वामित्र यद्यपि एक क्षत्रिय थे, किन्तु उन्होंने अपनी तपस्या के प्रभाव से ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया। महर्षि अगस्त्य और परशुराम, ब्राह्मण होने के बावजूद क्षत्रिय धर्म का निर्वाह करते रहे तथा त्रिजट नामक एक ब्राह्मण एक व्यापारी के रूप में जीवन यापन करता था। इस प्रकार रामायण में महर्षि वाल्मीकि वर्णव्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने कर्मों के अनुसार अपने वर्ण का चुनाव करने की स्वतंत्रता को व्यक्त करते हैं।

वाल्मीकि ऋषि होते हुए भी महाकाव्य के रचयिता हैं। वह समाज की विभिन्न जातियों के बीच समानता की भावना प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार, यह पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता स्थापित करता है।

"नहि स्त्रीषु महात्मानः क्वचित् कुर्वन्ति दारुणम्"॥[7]

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार समाज में महिलाओं को शिक्षा, पारिवारिक गतिविधियों, सामाजिक कार्यों और राजनीतिक मामलों में पूर्ण अधिकार प्राप्त थे।

पुरुषों के समाज में महिलाओं ने प्रत्येक गतिविधि में समान रूप से योगदान दिया। वाल्मीकि के मत में पुत्री का जन्म शुभ था। कन्या रत्न की प्राप्ति व्यक्ति की लंबी तपस्या का फल है।

"अवश्यं प्राणिनां प्राणं रक्षितव्या यथा वनम्"॥

जब जनक ने कन्या के रूप में सीता को प्राप्त किया तब से वे समृद्धिवान हुए।

"अवाप्तो विपुलामृद्धिमामवाप्य नराधिप"॥[8]

इससे स्पष्ट होता है कि कन्या का जन्म होना उस युग में भी सौभाग्यदायी माना जाता था।

यदि हम समाज में मानवता की स्थापना करना चाहते हैं तो वाल्मीकिरामायण के प्रत्येक विचारों को आत्मसात करना होगा क्योंकि ऐसी सामाजिक उत्थान की प्रेरणा,व्यापक प्रशासनिक व्यवस्था,राष्ट्र सेवा, संबंधों के निर्वहन की मर्यादा तथा मानवीय भावना अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। क्योंकि रामायण में वर्णित पात्रों का जीवन सीधे तौर पर धर्म के पालन का प्रतिनिधि के रूप में है।

राजा के विषय में सामाजिक विचार-

यदि कोई राजा अपनी प्रजा और अपने देश को समृद्धि की ओर ले जाने के लिए दिन-रात प्रयास करता है, तो वही राजा उस राज्य में राजा के पद को वास्तविक रूप से अलंकृत करता है। रामायण में पात्रों के रूप में सम्मिलित होने वाले सभी राजा अपने-अपने धर्म में लीन हैं।

हितानुबन्धमालोक्य कुर्यात् कार्यमिहात्मनः॥[9]

रावण अपने शत्रुओं के लिए दुष्ट हो सकता है लेकिन अपनी प्रजा के लिए वह सर्वगुण संपन्न राजा था । रावण जैसा अन्य कौन राजा होगा जो अपने महल के साथ-साथ प्रजा के लिए भी सोने के भवनों का निर्माण कराएगा? रावण की मृत्यु के बाद विभीषण ने ऐसे शब्दों में विलाप किया, जहाँ वह कहता है कि धर्म का विग्रहरावण भूमि पर गिर गया है-

गतः सेतुः सुनितानां गतो धर्मस्य विग्रहः।
गतः सत्त्वस्य संक्षेपः सुहस्तानां गतिर्गताः॥
आदित्यः पतितो भूमौ मग्नस्तमसि चन्द्रमा।
चित्रभानुः प्रशान्तार्चिर्व्यवसायो निरुद्यमः॥[10]

प्रजा की रक्षा करने वाले ऐसे राजा का चरित्र कहीं भी देखने को मिले तो हमें लंका में राक्षसों के स्वामी के चरित्र का अनुसरण करना चाहिए । इसलिए राम की कथा अद्भुत है,आज भी, रामराज्य की परिकल्पना मानव के सामाजिक जीवन का सर्वोत्तम प्रतिरूप प्रतीत होती है।

एक समय देवताओं के राजा अपने मित्र से वार्तालाप करने के लिये अयोध्या आये तब उन्होंने अयोध्या को देखने से विमुख होकर अपनी धर्मपत्नी शची से कहा, "हे देवी! जो समृद्धि अयोध्यावासियों को प्राप्त है वह हमारे स्वर्ग में नहीं रहती। यदि रामराज्य में प्रजा की इतनी समृद्धि है तो फिर रामराज्य के अलावा हम किस नाम के शासन को मानें।

रामायण में भारत की भौतिक समृद्धि का दृष्टिकोण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

प्रसादैः रत्नविकृतैः पर्वतैरिव शोभिताम्।
कूटागारैश्च सम्पूर्णांमिन्द्रस्येवामरावतीम्॥[11]

ना सहस्रदा[12] (दान दाताओं ने एक हजार से कम नहीं दिए)

सम्बन्धों के परिपालन में महर्षि वाल्मीकि का समाजचिंतन

भातृप्रेमः- मानवीय जीवन मूल्यों की रक्षा और उनके गरिमामय रिश्तों को लेकर वाल्मीकि की रचना धर्मिता अत्यंत अद्भुत हैं। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के मन में राम के प्रति किस प्रकार का भाईचारा प्रेम है और जिसका हर किसी को अनुकरण करना चाहिए, वे चारों भाई शरीर से अलग हैं, लेकिन जीवन में एक हैं-

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥[13]

दाम्पत्यसम्बन्धः-

इसी प्रकार दम्पति के रिश्ते, दशरथ का कौशल्या कैकेयी और सुमित्रा के साथ रिश्ता पूरी तरह से धार्मिक और मर्यादित था। उस समय शास्त्रों द्वारा संरक्षित मर्यादा का समुचित पालन किया गया।

सीता और राम के बीच का प्रेम आज भी लोक गीतों और सामाजिक कहानियों तथा अन्य ग्रंथों में गाया जाता है। क्योंकि राम के समान कोई राजा नहीं है और मैथिली के समान अन्य कोई रानी कहां मिलेगी।

वन में जाने को उद्यत सीता प्रेमपूर्वक कहती हैं कि गुरु की आज्ञा से मुझे आपके साथ चलना होगा।

तद्वियोगेन में राम व्यक्तव्यमिह जीवितुम्।।
पतिहीना तु या नारी न सा सक्ष्यति जीवितुम्॥[14]

रामकाव्यकार महर्षि वाल्मीकि द्वारा कहा गया है कि राम के अतिरिक्त इस प्रकार का कोई भी मानव इस पृथ्वी पर नहीं है जो सर्वदा धर्मपरिपालन के लिए तत्पर हों।

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता॥
धर्मज्ञः सत्यसंघश्च प्रजानां च हिते रतः॥[15]

इसी प्रकार समाज और आत्म-कल्याण के लिए पिता-पुत्र, माता-पुत्र के रिश्तों का निर्वहन करते हुए राम के चरित्र का बार-बार अनुकरण करना चाहिए।

उपसंहारः

हमें स्वयं के जीवन में वाल्मीकि कृत रामायण के उन पात्रों के चरित्र को आत्मसात करना चाहिए जो रामकथा के सार हैं। हम लक्ष्मण शत्रुघ्न और भरत के समान भ्रातृभाव रखें, होवे, विभीषण के समान धर्मात्मा हो, इसी प्रकार कुम्भकर्ण ने भ्रातृप्रेम का कर्तव्य निभाया। उसने रावण को धर्म के मार्ग पर लाने के लिए बार-बार समझाया अंत में थककर उन्होंने उत्तर दिया कि मैं जानता हूं कि आप रावण हैं, यहां आपके साथ अहंकार के त्याग की कोई व्यवस्था नहीं है, मैं आपका भाई हूं, इसलिए मैं अपने भ्रातृत्व के कर्तव्य को नहीं छोड़ूंगा, इसलिए मैं राम के हाथों अपने शरीर को त्याग कर परमगति की प्राप्ति का प्रयास करूंगा।

अवश्यं तु हितं वाच्यं सर्वावस्थं मया तव।
बन्धुभावादभिहितं भातृस्नेहाच्च पार्थिव॥[16]

जब देवी जानकी राक्षसों से भयभीत होकर अशोक उद्यान में अपना जीवन व्यतीत कर रही थीं, तब त्रिजटा नाम की एक स्त्री जनकनन्दिनी की सेवा में लगी हुई थी, जिसने उनकी उचित देखभाल की और एक पुत्री के रूप में उनका पालन-पोषण किया। यदि राक्षसों में भी ऐसा प्रेम देखने को मिलता है तो मानव समाज की स्त्रियों के लिए यदि हम प्रेम का प्रसार नहीं देख पाएंगे तो हम प्रेम की तलाश कहां करेंगे? दरअसल, वाल्मीकिरामायण के चौबीस हजार श्लोकों में धर्म की ओर प्रवृत्त करने के अनेक मार्ग निहित हैं।

निष्कर्षः

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥[17]

यदि स्वयं परमपिता ब्रह्मा ने किसी ग्रंथ के बारे में ऐसी गौरवपूर्ण बात कही है तो उस ग्रंथ की प्रसिद्धि युगों-युगों तक लोगों के अंतस्थ में बनी रहेगी। क्योंकि इस ग्रंथ के नायक स्वयं धर्म के रूप श्री राम हैं, जिस समाज में धर्म नायक होता है, वहां दीर्घकाल तक सुख, शांति और समृद्धि बनी रहती है, वहां रात्रिचरों और दुष्टों के लिए जीवन की कोई व्यवस्था नहीं होती। वाल्मीकिरामायण का प्रत्येक पात्र समाज को धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जैसे पात्रों ने अपने-अपने रिश्तों में धर्म का पालन किया। परन्तु वे जहाँ कहीं भी थे, राक्षस जाति भी अपने-अपने क्षेत्र में अपना आत्म-धर्म बनाए रखती थे। वहां विभीषण भक्त था और वह अपने धर्म के अनुसार आचरण करता था। रावण ने अपनी प्रजा के कल्याण के लिए लंका शहर में समृद्धि लाई कुम्भकर्ण ने भाई का कर्तव्य निभाया, मेंघनाद ने पुत्र का कर्तव्य निभाया और सुलोचना जैसी स्त्रियों ने अपने पतिव्रत का पालन किया।

रामायण के सभी पात्र अपने-अपने कर्मों में धर्म और कर्तव्य के प्रति समर्पित थे। अत: वाल्मिकी रामायण आत्मबोध का मार्ग है। यह ग्रंथ विश्व को शांति तथा कर्तव्यों के प्रति प्रेरित करता है।

सन्दर्भग्रन्थ- सूची

- **श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्**-गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत्–२०७१–७२।
- **ऋग्वेद**-गोविन्दचन्द्र पाण्डे (सम्पा.), लोकभारती प्रकाशन, १५ ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–१, प्रथम संस्करण, २०१०।
- **महाभारतम्**-गीताप्रेस, गोरखपुर, गोविन्द भवन कार्यालय, कोलकाता, संवत्–२०७०।
- **उत्तररामचरितम्**-महाकवि भवभूतिविरचितम्, सम्पा. रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

- **संस्कृत साहित्य का इतिहास**-आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।
- **धर्मशास्त्र का इतिहास** (भाग–१)-पाण्डुरंग वामन काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
- **मनुस्मृति**-सम्पा. हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
- **याज्ञवल्क्यस्मृति**- सम्पा. उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
- **रामायणकालीन संस्कृति**-डॉ. शान्तिकुमार नानूराम व्यास, सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- **वाल्मीकि रामायण में भारतीय संस्कृति**-डॉ. मदनमोहन शर्मा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

पाद टिप्पणी

[1]वा.रा.बा. १-१२

[2]महा.स्वर्ग.पर्व ५-४९

[3]वा.रा.अ. १४-३०

[4]ऋग्वेद. १०-९०-१२

[5]वा.रा.बा.१-९६

[6]वा.रा.यु. १-२८-१०४

[7]वा.रा.कि. ३३-३६

[8]वा.रा.अ.११८-३२

[9]वा.रा.यु.६३-१३

[10]वा.रा.यु.१०९-६,७

[11]वा.रा.बा.५-१५

[12]वा.रा.बा.६-१५

[13]वा.रा.यु.१०१-१५

[14]वा.रा.अ.२९-५,६

[15]वा.रा.अ.२९-५

[16]वा.रा.६३-३३

[17]वा.रा.बा.१-१२